सकती है और न होने को कोटि-कोटि जन्मों तक भी न हो। यह केवल इस सत्य को समझने और अंगीकार करने पर निर्भर करता है। खट्वांग महाराज ने देहान्त के कुछ क्षण पूर्व श्रीकृष्ण के शरणागत होकर इस कृतार्थ अवस्था को प्राप्त कर लिया था। 'निर्वाण' का अर्थ है विषयपरायण-जीवन की समाप्ति। बौद्ध दर्शन के अनुसार, इस प्राकृत जीवन के अन्त में केवल शून्य शेष रह जाता है; पर भगवद्गीता की शिक्षा इससे भिन्न है। यथार्थ जीवन का तो प्रारम्भ ही इस प्राकृत जीवन का अन्त हो जाने पर होता है। घोर विषयियों के लिए इतना जानना भी पर्याप्त होगा कि इस प्राकृत जीवन का अन्त निश्चित है। परन्तु भक्त महानुभावों के लिए इस प्राकृत-जीवन के पश्चात् एक चिन्मय जीवन भी है। इस जीवन का अन्त होने से पूर्व यदि कोई सौभाग्यवश कृष्णभावनाभावित हो जाय, तो उसे तत्क्षण **ब्रह्मनिर्वाण** पद प्राप्त हो जाता है। भगवद्धाम तथा भक्ति में कुछ भी भेद नहीं है। अतएव भगवद्भक्ति में तत्पर होना भगवद्धाम में प्रवेश करने जैसा है। प्राकृत-जगत् में इन्द्रियतृप्ति विषयक क्रियायें घटती हैं, जबकि वैकुण्ठ-जगत् में केवल कृष्णभावनाभावित कर्म होते हैं। जो इसी जीवन में कृष्णभावनाभावित हो जाता है वह तत्काल ब्रह्मभूत स्तर पर पहुँच जाता है। इतना ही नहीं, कृष्णभावनाभावित पुरुष तो वास्तव में देहान्त से पूर्व ही भगवद्धाम में प्रविष्ट हो चुका है।

ब्रह्मतत्त्व प्रकृति के ठीक विपरीत है। अतः **ब्राह्मी स्थितिः** का अर्थ है 'प्राकृत क्रियाओं के स्तर से अतीत अवस्था।' भगवद्गीता में भगवद्भक्ति को ही मुक्तावस्था माना गया है। अतः भवबन्धन से मुक्ति का नाम **ब्राह्मी स्थिति** है।

श्री भक्तिविनोद ठाकुर के अनुसार भगवद्गीता का यह द्वितीय अध्याय सम्पूर्ण ग्रन्थ के प्रतिपाद्य-तत्त्व का सारांश है। भगवद्गीता के प्रतिपाद्य हैं 'कर्मयोग', 'ज्ञानयोग' तथा 'भक्तियोग'। द्वितीय अध्याय में सम्पूर्ण ग्रन्थ की अन्तर्वस्तु के रूप में 'कर्मयोग' तथा 'ज्ञानयोग' का विशद निरूपण है एवं भक्तियोग की अवतरणिका भी विज्ञापित है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः।।२।।
इति भक्तिवेदान्त भाष्ये द्वितीयोऽध्यायः।।